हिन्दी भाषाः कितनी सम्पन्न

डॉ0 अनीता जैन
प्राचार्या, जे0ए0वी0जी0 डिग्री कालिज, बड़ौत
Email:dranitajain.61@gmail.com

सारांश

हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं, अपितु प्रत्येक हिन्दुस्तानी की पहचान है, प्रत्येक हिन्दुस्तानी का गर्व है, प्रत्येक हिन्दुस्तानी का ताज है, आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि एवं ध्वन्यात्मकता के कारण सबसे शुद्ध एवं विज्ञान समस्त भाषा है। हमारे यहां एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु यानि अनुस्वार का भी अपना महत्व है। हिन्दी आज अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। वह नयी प्रौद्योगिकी, विपणन तन्त्र और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की भाषा बन चुकी है। वह विकास की भाषा बन रही है। इस प्रक्रिया को यदि हम रचनात्मक तरीके से आगे बढ़ाये तो विश्व भाषा के रूप में हिन्दी विश्व पर आसीन हो सकती है।

प्रस्तावना

भाषा, धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता– ये खर ऐसे तत्व हैं, जो मनुष्य जाति को परस्पर मिलाते हैं और अलग भी करते हैं। यह विरोधाभास सा प्रतीत होता है कि एक ही वस्तु एकीकरण और पृथक्करण दोनों का साधन हो, पर बात साफ है क्योंकि भाषा ही ऐसा साधन है जो मनुष्य को पशुओं से पृथक कर उसे मनुष्य से भिन्न बनाती है। साहित्य, ज्ञान, विज्ञान और कला सभी क्षेत्रों में मनुष्य की समस्त उपलब्धियों का एकमात्र आधार भाषा ही है।

स्वभावतः भाषा का मानव–जीवन में बड़ा महत्व है, जैसा कि आचार्य दंडी ने भी कहा है– मनुष्य के सारे क्रियाकलाप भाषा के द्वारा ही निष्पन्न होते हैं–

इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयं।

यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते। काव्यादर्श, 1।

यह त्रिभुवन अंधकार में निमग्न हो जाता यदि सृष्टि के आरम्भ से शब्द (भाषा) की ज्योति न जली होती।

इसी तथ्य की अभिव्यक्ति विख्यात दार्शनिक एवं वैयाकरण भातृहरि ने भी की है–

अर्थ प्रकृति तत्वानां शब्दा एवं निबन्धनं। वाक्यपदीय (ब्रंह्मकांड) अर्थात व्यवहार में प्रवृत्ति के साधन शब्द ही हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि जो भी लौकिक–व्यवहार सम्पन्न होते हैं, वे भाषा के माध्यम से ही होते हैं। कोई व्यक्ति कितना भी विद्वान, महान और आकर्षक क्यों न हो, पर जब तक हम उसकी बात नहीं समझते तब तक हम उसकी ओर आकृष्ट नहीं होते।

आज जब विज्ञान के कारण दूरी की भावना बहुत कम हो चुकी हैं, संसार गोष्पद जैसा बन गया है और समुन्नत संचार माध्यमों के कारण हम संसार के एक कोने से दूसरे कोने में बैठे व्यक्तियों से केवल बाते ही नहीं करते अपितु उनकी आकृति भी देख सकते हैं, तब भाषा का महत्व सहज ही स्पष्ट हो जाता है।

जिस प्रकार जन्मना सभी मनुष्य समान हैं, किन्तु वंश, परिवेश और पारिस्थिति आदि के भेद से उनके महत्व में अन्तर आ जाता है, उसी प्रकार भाषा विज्ञान की दृष्टि से सभी भाषाएं समान होती हैं किन्तु कुछ ऐसे कारण होते हैं जिससे उनके आपेक्षिक महत्व में अन्तर आ जाता है। वे कारण हैं—

1. बोलने वाली की संख्या
2. वितरण
3. व्यावसायिक स्थिति
4. औद्योगिक संभावना
5. वैज्ञानिक स्थिति
6. सांस्कृतिक स्थिति
7. साक्षरता
8. राजनीतिक तथा सामरिक स्थिति

संसार में आज जितनी भाषाएं बोली जाती है, उनकी संख्या निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। सामान्यतः कह सकते हैं कि विश्वभर में बोलचाल के लिये लगभग 3500 भाषाओं और बोलियों का प्रयोग किया जाता है। किन्तु एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक लिखकर बात हो पहुंचाने के लिये इनमें से पांच सौ से अधिक भाषाओं और बोलियों का प्रयोग नहीं होता। लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के संचार माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में से लगभग सोलह भाषाएं ऐसी हैं जिनका व्यवहार पांच करोड़ से अधिक लोग करते हैं। विश्व की ये भाषाएं हैं—अरबी, अंग्रेजी, इतावली, उर्दू, चीनी परिवार की भाषाएं, जर्मन, जापानी, तमिल, तेलगू, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, बांग्ला, मलयालम, रूसी, स्पेनी और हिन्दी।

जिस प्रकार राजनीतिक या सामरिक दृष्टि से अधिक जनसंख्या वाले देश का महत्व अधिक होता है, उसी प्रकार जिस भाषा के बोलने वालों की संख्या जितनी अधिक होती है वह अन्य की तुलना में स्वभावतः उतनी ही अधिक महत्वपूर्ण बन जाती है। ऊपर हमने जिन भाषाओं का उल्लेख किया है, उनका सम्यक अध्ययन करने पर हम कह सकते हैं कि 'फ्रेंच' भाषा मुख्यतः फ्रांस, बेल्जियम, कनाडा और कैमरून में सर्वाधिक बोली जाती है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से भाषा सूची में इसे दसवा स्थान प्राप्त है। मलयालम भाशा भारत के दक्षिण पूर्व में स्थित देशों में अधिक बोली जाती है। मुख्य रूप से इसका प्रयोग मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया और ब्रनेई में होता है। भाषा सूची में यह नवें स्थान पर माना जाती है। 'पुर्तगाली' भाषा पुर्तगाल में सर्वाधिक बोली जाती है। इस भाषा को सम्पूर्ण विश्व में 19 करोड़ लोग बोलते हैं। पुर्तगाल के

अलावा यह भाषा ब्राजील, अंगोला, वेनेएजुला, मोजाबिक आदि देशों में बोली जाती है। भाषा सूची में इसका स्थान आठवां है। बंगाली भाषा सिर्फ बंगाल में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में बोली जाती है। यह भाषा ब्रिटेन और यूरोपीय गणराज्यों में भी बोली जाती है। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 211 मिलियन है और भाषा सूची में यह सातवें स्थान पर है। अरेबिक भाषा सूची में छठवें स्थान पर है। यह भाषा सऊदी अरब, कुवैत, यूएई, ओमान, यमन, बहरीन, सीरिया, जार्डन, लैबनान, इराक और इजिप्ट में बोली जाती है। इसे बोलने वालों की संख्या 246 मिलियन है। 'रूसी' भाषा पौलेंड़, चैकोस्लोवाकिया, बेलास्स और कजाकिस्तान में बोली जाती है। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 20 करोड़ से अधिक हैं। भाषा सूची में यह पांचवे स्थान पर आती है। 'हिन्दी भाषा' विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में चौथे स्थान पर मानी जाती रही है। इस भाषा को सम्पूर्ण विश्व में लगभग एक अरब अठारह लाख लोगों के द्वारा बोली जाती है। 'अंग्रेजी भाषा' अपने मूल रूप में अमेरिका, आस्ट्रेलिया और ब्रिटेन में बोली जाती है। लेकिन पूरे विश्व में लगभग 508 मिलियन लोग इसका प्रयोग करते हैं। यह दुनिया की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में है। 'स्पेनिश' भाषा मध्य अमेरिका, कनाडा, स्पेन, यूरोपीय देशों एवं दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप में सर्वाधिक बोली जाती है। भाषा सूची में यह दूसरे स्थान पर मानी जाती है। 'मंदारिन' भाषा हर किसी को लगता है कि अंग्रेजी और स्पेनिश विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाएं हैं किन्तु वास्तविकता यह है कि अंग्रेजी भाषियों की संख्या 'मंदारिन' भाषियों से बहुत कम है। कुल आंकड़ों में यदि बात की जाये तो यह भाषा लगभग एक अरब लोगों के द्वारा बोली जाती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह प्रचारित किया जाता है कि चीन की मंदारिन विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है लेकिन वास्तवकिता यह है कि हिन्दी ने इसको काफी पीछे छोड़ दिया है। यह जानकारी मैंगलूर (कर्नाटक) के डा0 जयन्ती प्रसाद नौटियाज की शोध रिर्पोट में सामने आई है। विश्व में हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के लिये कार्य करने वाले ग्वालियर के आचार्य महेन्द्रनाथ मेहरोत्रा ने भी अपनी विश्वव्यापी ग्रंथ श्रंखला के प्रथम खंड में इसे सही ठहराया है। उनके अनुसार देशवासियों के लिये यह गर्व और खुशी की बात है कि दुनिया में हिन्दी का प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली लोकप्रिय भाषा बन चुकी है।

चीन की वर्तमान जनसंख्या लगभग 1360 मिलियन है। वहां के 70 प्रतिशत लोग मंदारिन बोलते हैं। यानि चीन में मंदारिन बोलने वालों की संख्या 950 मिलियन है व 150 मिलियन मंदारिन भाषी अन्य देशों में हैं। इधर सन् 2012 में हिन्दी जानने वालों की संख्या 1200 मिलियन थी। सन् 2015 में इसमें वृद्धि हुई और हिन्दी जानने वालों की संख्या 1300 मिलियन हो गई। यानि मंदारिन से 200 मिलियन अधिक लोग हिन्दी जानते हैं। अमेरिका ने हिन्दी शिक्षण के लिये अरबों रूपये का बजट निर्धारित किया है। हिन्दी सर्वाधिक सरल, वैज्ञानिक व शाश्वत मूल्यों की भाषा है। यही कारण है कि हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है और विदेशों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है। तेजी से हिन्दी सीखने वाले

देशों में चीन सबसे आगे हैं। फिलहाल चन के बीस विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। 2020 तक यहां हिन्दी पढ़ाने वाले विश्वविद्यालयों की संख्या 50 तक पहुंचने की उम्मीद है।

डा0 करूणाशंकर उपाध्याय ने भी अपनी पुस्तक में दिये गये आकंड़ों में डा0 जयन्ती प्रसाद नौटियाल द्वारा सन् 2012 में किये शोध अध्ययन के अलावा, 1999 की जनसंख्या, द वर्ल्ड आल्मेनक एंड बुक ऑफ फैन्टस, न्यूज पेपर एंटरप्राइजेज एसोसिएशन अंक, न्यूयार्क और मनोरमा इयर बुक आदि के आधार पर यह बताया है कि दुनिया में सबसे ज्यादा बोलने वाली भाषा चीन की मंदारिन है लेकिन मंदारिन बोलने वालों की संख्या चीन में ही भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या से काफी कम है। चीनी न्यूज एजेंसी सिन्दुआ की एक रिपोर्ट के अनुसार केवल 70 प्रतिशत चीनी ही मंदारिन बोलते हैं जबकि भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 78 प्रतिशत है। भारत के अतिरिक्त मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी, ग्याना, ट्रिमिडाड और टोबैगो आदि देशों में हिन्दी ब्रहप्रयुक्त भाषा है। भारत के बाहर फिजी ऐसा देश है जहां हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हिन्दी को वहां की संसद में प्रयुक्त करने की मान्यता प्राप्त है। मॉरिशस में तो बाकयदा 'विश्व हिन्दी सचिवालय' की स्थापना हुई है। जिसका उददेश्य ही हिन्दी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करना है।

बोलने वालों की संख्या के बाद दूसरा स्थान वितरण का आता है। अर्थात् जो भाषा जितने अधिक भागों में फैली होती है उसका महत्व उतना ही अधिक होता है। इस दृष्टि से भी हमें हिन्दी का महत्व स्वीकार करना होगा। आज भारत में यही एकमात्र ऐसी भाषा है जिसमें हम देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अपना काम चला सकते हैं। दो प्रतिशत अंग्रेजी जानने वालों से भारत नहीं चल रहा है अपितु 98 प्रतिशत लोग जिस भाषा में विचार विनिमय कर पा रहे हैं वह हिन्दी ही है। तीर्थाटन, व्यापार, वाणिज्य, भ्रमण ये सब हिन्दी के माध्यम से ही सम्पन्न हो पा रहे हैं। उत्तर का श्रद्धालु भक्त जब रामेश्वरम जाता है तो वह अंग्रेजी की शरण नहीं लेता, उसका काम हिन्दी से चलता है। वहां के पंडे भी हिन्दी में बाते करते है। भारत के बाहर अंडमान द्वीप, बर्मा, लंका, ब्रिटिश, गायना, वैस्टइंडीज, दक्षिणी एवं पूर्वी अफ्रीका, भलाया, इंडोनेशिया, फिजी, चीन और मॉरिशस आदि देशों में हिन्दी भाषियों का काम बहुत दूर तक चल जाता है।

हिन्दी की व्यापकता के विषय में अब कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आज यह चीनी भाषा मंडारिन की भांति विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। अत्यंत रोचक तथ्य तो यह है कि जिस हिन्दी को कुछ समय पहले तक तकनीक और रोजगार की भाषा मानने में हिचक हो रही थी, उन समस्त बाधाओं को पार करते हुए यह भाषा अपने कदम आगे बढ़ाती जा रही है। आज अनेक मल्टीनेशनल कंपनियां अपना व्यापार बढ़ाने के लिये हिन्दी को अपनाती जा रही है। और अंग्रेजियत का हव्वा दिन ब दिन कम होता जा रहा है। जहां तक तकनीकि क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग का प्रश्न है तो हम कह सकते हैं कि सरकारी प्रयासों के बिना ही यह बेहद तेजी से आगे बढ़ रही है। हाँ, हिन्दी की कई जगहों पर इन्स्क्रिप्ट और हिंग्लिश या रोमन में जरूर लिखा जा रहा है, किन्तु जैसे–जैसे तकनीक विकसित होती जायेगी, देवनागरी लिपि के प्रयोग की स्पष्ट विधि भी निकाल ली जायेगी। हाल फिलहाल तो गुगल और दूसरी

कंपनियों ने हिन्दी लिखने के लिये जो तकनीक खोजी है उसमें बोलकर लिखने की तकनीक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हालांकि इसका प्रयोग अभी व्यापक स्तर पर नहीं हुआ है, किन्तु वह दिन दूर नहीं जब तकनीक के क्षेत्र में भी हिन्दी भाषा अंग्रेजी को पटखनी देगी।

माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिलगेट्स ने एक बार अपने वक्तव्य में कहा था कि जब बोलकर लिखन की तकनीक उन्नत हो जायेगी तब हिन्दी अपनी लिपि की श्रेष्ठता के कारण सर्वाधिक सफल होगी। यह बात आज हम साक्षात देख रहे हैं। आज सोशल मीडिया से लेकर ब्लॉग और तमाम वैबसाइट माध्यमों पर यह अत्रूंत समृद्ध रूप में विराजमान है, जिसे आगे बढ़ाये जाने की आवश्यकता है।

हिन्दी के विकास मार्ग में सबसे बड़ी कठिनाई वैज्ञानिक, पारिभाषिक और प्राविधिक शब्दावली को लेकर हैं, किन्तु इसमें हिन्दी का कोई दोष नहीं है, दोष है जो लगभग 800 वर्षों की राजनीतिक स्थिति का, क्योंकि मुस्लिम शासन में फारसी का बोलबाला रहा और अंग्रेजी शासन में अंग्रेजी का, इसलिये हिन्दी को विकास के अवसर न के बराबर प्राप्त हुई। भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। विगत वर्षों में यह अभाव बहुत कुछ दूर हो सकता था किन्तु सरकार की ढुलमुल नीति और अधिकारियों की उपेक्षा ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण कार्य को उचित रीति और गति से अग्रसर नहीं होने दिया।

जहाँ तक सांस्कृतिक दृष्टि से हिन्दी के महत्व का विषय है तो हम निःसंकोच कह सकते हैं कि इस दृष्टि से हिन्दी किसी भी आधुनिक भाषा से पीछे नहीं है। उसकी साहित्यिक–समृद्धि निश्चित ही सन्तोष एवं ईर्ष्या की वस्तु है और उसकी सांस्कृतिक मूल्य न के बराबर है। ऐसे लोगों का उत्तर मौन है। 'नेषे स्थाणोरपराधः यदेनमंधो न पश्यति, पुरूषापराधः स भवति।'

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी विश्वभाषाओं में प्रथम स्थान की अधिकारिणी है। हालांकि इसके सामने अभी कई ऐसी चुनौतियां हैं, जिनका निवारण किया जाना आवश्यक है। अगर तथ्यों का क्रमवार विश्लेषण करे तो वर्तमान में हिन्दी के कई प्रकार सामने आते है जैसे राष्ट्रभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं के सन्दर्भ में हिन्दी आदि। जब हम सरकारी हिन्दी की बात करते हैं तो बेहद निराशाजनक तस्वीर सामने आती है। आप यदि किसी सरकारी विभाग में कोई प्रपत्र या फार्म देखे तो, आप अपना माथा पीट लेगें कि आखिर यह कौन सी हिन्दी लिखी है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिन्दी अत्यंत सामर्थ्य–सम्पन्न भाषा है, उसका भविष्य अति उज्जवल है। आज भारत और विश्व के कई प्रकाशन इसे स्वीकार कर हिन्दी को प्रथम स्थान पर दिखाने लगे है। अतः मेरा अनुरोध है कि विश्व के हर प्रकाशन में हिन्दी जानने वालों की संख्या 1023 मिलियन दर्शायी जानी चाहिए और मंदारिन का 900 मिलियन। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र–संघ को अविलम्ब संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकृत भाषा का दर्जा दे देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

1. विश्व में हिन्दी फिर पहले स्थान पर, डा0 जयन्ती प्रसाद नौटियाल।
2. विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिन्दी का स्थान, डा0 रामजी लाल जांगिड।
3. हिन्दी कुंज, काम भारत कोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर।
4. वैश्विक स्तर पर हिन्दी, डा0 रेनू मुखर्जी साहित्यकारों की वैब पत्रिका, अंक 26 दिस0 2017 विकीपीडिया एवं अन्य स्रोत्र।